BERKELEY'S CONCEPTION OF GOD

बर्कले का ईश्वर सम्बन्धी विचार ।

Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons. Student)

बर्कले का यह मानना है कि प्राथमिक गुण भी गौण गुणों की तरह मन पर निर्भर हैं और हमारे मन के प्रत्ययों के अलावा जगत में अन्य कुछ नहीं है।पर यहाँ यह भी प्रश्न उठता है कि जिनके विषय में हमारे मन में कोई प्रत्यय नहीं है या कुछ वस्तुएँ तथा घटनाएं जो पृथ्वी पर मनुष्यों के अवतरण के पहले से मौजूद प्रतीत होती हैं, उनके अस्तित्व का वर्णन किस प्रकार किया जायेगा ?यहाँ पर बर्कले ईश्वर के प्रत्यय को ले आते हैं,जो प्रत्यय किसी भी सीमित आत्मा में नहीं है, वे ईश्वर में है।

बर्कले के अनुसार ईश्वर जगत के स्रष्टा है।वे जगत के केवल निमित्त कारण नहीं है वरन उपादान कारण भी है। ईश्वर से बाहर जगत का कोई अस्तित्व नहीं है।कुछ भाष्यकारों के अनुसार ईश्वर के लिए सृष्टि का अस्तित्व ही नहीं है। सृष्टि का अस्तित्व केवल जीव आत्माओं के लिए ही है। जिस प्रकार हम सृष्टि का प्रत्यक्ष करते हैं ईश्वर उसी रूप में सृष्टि का प्रत्यक्ष नहीं करता। जिस सृष्टि का हम प्रत्यक्ष करते हैं वाह अनित्य प्रतिबिंब होता है।जहां तक मूल नित्य बिंबो का प्रश्न है उन्हें हम नहीं जानते। वे केवल ईश्वर को ही ज्ञात हैं। जिस रिश्ते को हम जानते हैं वह ईश्वरीय मूल बिंदु का प्रतिबिंब होती है। इस प्रकार बर्कले जगत की परमार्थिक एवं व्यावहारिक सत्ता में भेद करते हैं साधारण प्राणियों को जगत की व्यवहारिक सत्ता का ही ज्ञान हो सकता है परमार्थिक सत्ता का ज्ञान केवल ईश्वर का ही होता है।जहां तक ईश्वर जगत के बीच संबंध का प्रश्न है बर्कले अतीश्वरवाद में विश्वास करते हैं जिसके अनुसार यद्यपि जगत ईश्वर के भीतर स्थित है पर ईश्वर जगत से अतीत है।

जीवात्मा और परमात्मा का भेद करते हुए बर्कले कहते हैं कि जीवात्माएं सक्रिय होते हुए भी निष्क्रिय होती हैं। जीवत्माओं में सक्रियता निष्क्रियता दोनों अवश्य विद्यमान होते हैं। यही कारण है कि उनमें कम सत्यता पाई जाती है। ईश्वर मूल बिंदु को उत्पन्न करते हैं पर जीवात्माएं उन्हें उत्पन्न ना कर केवल ग्रहण ही करती हैं। जीवात्माएं केवल प्रतिबिंबो को ही उत्पन्न कर सकती हैं। जीवात्माओं और परमात्मा के अतिरिक्त संसार में अन्य किसी वस्तु का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है। विज्ञानों के पुंजरूप में जगत का अस्तित्व आत्माओं के अधीन है।इस दृष्टि से बर्कले प्रत्ययवादी होने की अपेक्षा अध्यात्मवादीअधिक हैं। जगत अध्यात्ममय है। हम सभी ब्रह्म लोक के निवासी हैं।एक श्रृंखला में वर्कले ने लिखा

है कि जीवात्मा परमात्मा का ही एक अंश है। इसी प्रकार माननीय ज्ञान के सिद्धांत में वे कहते हैं,ईश्वर में हमें स्थित हैं, विचरण करते हैं और अस्तित्व को धारण करते हैं।

ईश्वर हमारे मन में सतत तथा नियत व्यवस्था के अनुसार कुछ प्रत्यय बनाता है जो कि प्रकृति के नियमों के द्वारा निर्धारित होते हैं। वास्तव में यह प्राकृतिक नियम परम आत्मा ईश्वर के असीम मनस के नियम है।ईश्वर ने कुछ प्रत्यय को दूसरों प्रत्यय से निश्चित रूप से संबंधित कर दिया है। उदाहरण के लिए भोजन के प्रत्यय से पोषण का प्रत्यय जुड़ा है। इसी तरह नींद के प्रत्यय ताजे होने का प्रत्यय जुड़ा है। आग के चाक्षुष प्रत्यय से ताप की संवेदनाएं जुड़ी हैं। अगर हमारी संवेदना ओं में किसी तरह की व्यवस्था ना होती तो हमें कोई भी कार्य करने में बहुत दिक्कत होती क्योंकि हमें यह ज्ञात नहीं हो पाता की हमें अगले क्षण किस घटना की अपेक्षा करनी है। इसलिए ईश्वर नहीं संवेदनाओं में व्यवस्था पैदा की है जिससे कि हमारे दैनिक जीवन के कार्य भली प्रकार चल सके। इस तरह एक धार्मिक व्यक्ति के कारण वे प्रकृति की व्याख्या को ईश्वर द्वारा उत्पन्न किया मानता है।

मनुष्य के अपने मन के प्रत्यय में तथा ईश्वर के द्वारा पैदा किए प्रत्ययों में भेद है। इसी कारण ईश्वर के माध्यम से उत्पन्न किए गए प्रत्यय यथार्थ वस्तु कहलाते हैं और हमारी कल्पनाओं से तथा स्मृति प्रतिमाओं से अलग होते हैं। हमारे मन के प्रत्यय ईश्वर के माध्यम से पैदा की गई संवेदनाओं की अपेक्षा कम व्यवस्थित कम विविध तथा कम समय तक रहने वाले होते हैं। ये वास्तविक वस्तुओं की प्रतिलिपिया, प्रतिनिधि या छायाएं मात्र हैं। दूसरी ओर ईश्वर के द्वारा उत्पन्न की गई संवेदनाएं ज्यादा व्यवस्थित विविध तथा सतत होती हैं।

बर्कले अपने दर्शन में ईश्वर के प्रत्यय को लाकर यथार्थवाद बना देता है क्योंकि वह प्रत्यय के अलावा अन्य कुछ नहीं मानता।इसलिए उनके दर्शन में यह समस्या पैदा होती है कि क्या सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, पर्वत, नदियां, वृक्ष, मकान इत्यादि प्रत्यय मात्र हैं। इसके उत्तर में उनका कहना है कि वह काल्पनिक नहीं है अपितु यथार्थ हैं उनकी संवेदनाएं व्यवस्थित रूप में ईश्वर के माध्यम से पैदा की जाती हैं।इस अभिप्राय में वह जड़ तत्व की यथार्थता को भी मानने के लिए तैयार हैं क्योंकि जड़ वस्तुओं की संवेदनाओं को ईश्वर ही हमारे मन में पैदा करता है।